ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9679
Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

मधेपुरा जिले में ग्रामीण कामकाजी युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाएँ और बाधाएँ

कुमारी विजेता

शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, बी एन एम यू, मधेपुरा

डॉ0 विमला कुमारी

शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग, बी एन एम यू, मधेपुरा

Article Info: *(Recieved- 30/12/2025, Accept- 09/02/2026, Published- 10/02/2026)*
DOI- 10.70650/rpimj.2026v2i100006

शोध सार–

स्वरोजगार ग्रामीण युवाओं के लिए आज का एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक विषय बन चुका है। मधेपुरा जिले, जो बिहार राज्य के प्रमुख ग्रामीण जिलों में से एक है, में रोजगार की सीमित अवसरताओं और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण युवा वर्ग में स्वरोजगार की दिशा में रुचि बढ़ रही है। यह अध्ययन मधेपुरा जिले के ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाओं और उनके सामने आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया। अध्ययन से पता चलता है कि युवाओं के लिए स्वरोजगार के क्षेत्र विविध हैं, जिनमें कृषि आधारित व्यवसाय, पशुपालन, हस्तशिल्प, छोटे पैमाने पर उद्योग, डिजिटल व्यवसाय और खुदरा व्यापार शामिल हैं। इन क्षेत्रों में युवाओं के लिए स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता संभव है। इसके अलावा, राज्य और केंद्रीय स्तर पर स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं के लिए अवसरों को और अधिक सुलभ बनाते हैं। हालांकि, मधेपुरा जिले में स्वरोजगार की दिशा में कई बाधाएँ भी सामने आती हैं। प्रमुख बाधाओं में पूंजी की कमी, तकनीकी जानकारी का अभाव, बाजार तक पहुँच में कठिनाई, अविकसित आधारभूत संरचना और बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानों से सीमित सहयोग शामिल हैं। इसके अलावा, ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार को लेकर जोखिम की भावना और पारंपरिक रोजगार की अपेक्षाओं के कारण भी स्वरोजगार की दिशा में पूर्ण रूप से प्रयास नहीं हो पाते। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मधेपुरा जिले में स्वरोजगार को सफल बनाने के लिए वित्तीय सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण, बाजार सूचना प्रणाली, सरकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार और मानसिकता में बदलाव आवश्यक हैं। स्वरोजगार न केवल युवाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान करेगा, बल्कि स्थानीय विकास, बेरोजगारी में कमी और सामाजिक उत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसलिए, ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाओं का सही दिशा में विकास करना और बाधाओं को दूर करना अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य बिन्दु– ग्रामीण स्वरोजगार, युवाओं का आर्थिक सशक्तिकरण, स्वरोजगार की बाधाएँ, स्वरोजगार की संभावनाएँ।

परिचय

स्वरोजगार आज के समय में ग्रामीण विकास और युवाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, लेकिन कृषि में सीमित रोजगार और

अस्थायी आय के कारण युवा वर्ग के लिए स्थायी रोजगार की संभावना कम होती है। इस स्थिति में स्वरोजगार युवाओं को न केवल आर्थिक स्वतंत्रता देता है, बल्कि उनके सामाजिक और मानसिक विकास में भी योगदान करता है। स्वरोजगार के माध्यम से युवा अपनी क्षमताओं और रचनात्मकता का प्रयोग कर सकते हैं, नए व्यवसाय की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं और स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग कर सकते हैं। मधेपुरा जिला बिहार राज्य के प्रमुख ग्रामीण जिलों में से एक है। यह जिला मुख्य रूप से कृषि आधारित है, जहाँ अधिकतर ग्रामीण जनसंख्या कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है। मधेपुरा जिले में उद्योग और बड़े पैमाने पर रोजगार की कमी है, जिसके कारण युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाओं की आवश्यकता और महत्व बढ़ गया है। इसके अलावा, इस जिले की भौगोलिक स्थिति, संसाधनों की उपलब्धता और सांस्कृतिक परंपराएँ स्वरोजगार के अवसरों और चुनौतियों को प्रभावित करती हैं। ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और सरकारी योजनाओं की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार की संभावनाएँ कई रूपों में मौजूद हैं। इनमें कृषि आधारित स्वरोजगार जैसे जैविक खेती, फसल प्रसंस्करण, फल एवं सब्जी उत्पादन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन जैसी गतिविधियाँ भी युवाओं को आय का स्थायी स्रोत प्रदान कर सकती हैं। गैर–कृषि आधारित स्वरोजगार में छोटे पैमाने पर उद्योग, हस्तशिल्प, सिलाई–कढ़ाई, डिजिटल सेवाएँ और खुदरा व्यापार प्रमुख हैं। इन संभावनाओं को सफल बनाने के लिए युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण, बाजार की जानकारी और वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है। हालांकि मधेपुरा जिले में स्वरोजगार की कई संभावनाएँ हैं, इसके बावजूद ग्रामीण युवाओं के सामने कई बाधाएँ भी आती हैं। सबसे प्रमुख बाधा पूंजी की कमी है, क्योंकि अधिकांश युवा स्वरोजगार शुरू करने के लिए आवश्यक प्रारंभिक निवेश जुटाने में असमर्थ होते हैं। इसके अलावा, तकनीकी ज्ञान और आधुनिक उपकरणों की कमी, बाजार तक सीमित पहुँच, अविकसित आधारभूत संरचना और सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव भी स्वरोजगार को प्रभावित करता है। सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ जैसे जोखिम लेने की हिचकिचाहट, पारंपरिक रोजगार की अपेक्षाएँ और परिवार की मानसिकता भी स्वरोजगार के विकास में अवरोधक साबित होती हैं। स्वरोजगार न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह युवाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में भी योगदान देता है। स्वरोजगार के माध्यम से युवा आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हैं, सामाजिक पहचान प्राप्त करते हैं और अपनी निर्णय क्षमता का विकास करते हैं। मधेपुरा जिले में युवाओं को स्वरोजगार की दिशा में प्रशिक्षण और अवसर प्रदान करके उनकी क्षमताओं को निखारा जा सकता है। यह न केवल बेरोजगारी को कम करेगा, बल्कि स्थानीय विकास, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक बदलाव में भी योगदान देगा। मधेपुरा जिले में स्वरोजगार के क्षेत्र और बाधाओं का विश्लेषण करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह युवा वर्ग के भविष्य और जिले के आर्थिक विकास को सीधे प्रभावित करता है। ग्रामीण युवाओं के स्वरोजगार की संभावनाओं को समझना, उनके सामने आने वाली समस्याओं को पहचानना और उनका समाधान सुझाना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षण संस्थाओं और स्वयंसेवी संगठनों को भी दिशा–निर्देश प्रदान कर सकता है, जिससे युवा वर्ग के लिए स्वरोजगार के अवसर अधिक सुलभ और प्रभावी बन सकें। स्वरोजगार न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि यहां बेरोजगारी का स्तर उच्च है और पारंपरिक कृषि आधारित रोजगार पर्याप्त नहीं है। युवाओं के लिए स्वरोजगार उनके आत्म–सम्मान और सामाजिक पहचान को बढ़ावा देता है। यह उन्हें समाज में सक्रिय भूमिका निभाने, निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने और व्यक्तिगत एवं सामुदायिक विकास में योगदान करने का अवसर देता है। इस दृष्टि से अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि किस प्रकार स्वरोजगार ग्रामीण युवाओं के सामाजिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक विकास में योगदान दे सकता है। मधेपुरा जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, लेकिन कृषि में अस्थायी रोजगार और मौसमी आय के कारण स्थायी आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती। स्वरोजगार आर्थिक स्वतंत्रता और आय का स्थायी स्रोत प्रदान करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझना संभव है कि किस प्रकार ग्रामीण युवा स्वरोजगार के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि आधारित व्यवसाय, छोटे उद्योग, हस्तशिल्प, डिजिटल व्यवसाय में निवेश कर सकते हैं और अपने आर्थिक जीवन को सुदृढ़ बना सकते हैं। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं और विकास संगठनों के लिए भी महत्वपूर्ण होगा ताकि युवा आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त कर सकें। यह अध्ययन मधेपुरा जिले में युवाओं के लिए स्वरोजगार योजनाओं की प्रभावशीलता और

आवश्यकता का आकलन करने में सहायक होगा। भारत सरकार और बिहार सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वरोजगार और कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रभाव और उनके लाभों का विश्लेषण करना आवश्यक है। इससे यह पता लगाया जा सकेगा कि कौन सी योजनाएँ सफल हैं, किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है और किस प्रकार ग्रामीण युवाओं को अधिक प्रभावी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

स्वरोजगार से जुड़ी मानसिक बाधाओं को समझना भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ग्रामीण युवा अक्सर पारंपरिक रोजगार की ओर झुकाव रखते हैं और स्वरोजगार के जोखिमों से डरते हैं। यह अध्ययन उनकी मानसिकता, जोखिम लेने की क्षमता और स्वरोजगार के प्रति उनकी धारणाओं का विश्लेषण करेगा। इसके माध्यम से यह जाना जा सकेगा कि युवाओं में व्यवसायिक सोच, नवाचार और समस्या समाधान क्षमता को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है। स्वरोजगार केवल व्यक्तिगत आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे ग्रामीण समाज के विकास में भी योगदान करता है। मधेपुरा जिले में स्वरोजगार युवाओं को स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने का अवसर देता है। इससे स्थानीय उद्योग और व्यवसायों का विकास होता है, रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं और सामाजिक उत्थान में योगदान होता है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार स्वरोजगार न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। स्वरोजगार के क्षेत्र में सफलता के लिए तकनीकी और व्यवसायिक कौशल अत्यंत आवश्यक हैं। यह अध्ययन यह बताएगा कि किस प्रकार शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम युवाओं को स्वरोजगार के लिए सक्षम बना सकते हैं। मधेपुरा जिले में कौशल प्रशिक्षण केंद्रों, स्वयंसेवी संस्थाओं और सरकारी योजनाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकि युवाओं के लिए स्वरोजगार अवसर और अधिक सुलभ और प्रभावी बने।

साहित्य की समीक्षा

स्वरोजगार पर किए गए कई राष्ट्रीय स्तर के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार का महत्व लगातार बढ़ रहा है। शर्मा (2018) के अनुसार, भारत में कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था में युवाओं के लिए स्वरोजगार अवसर सीमित हैं, लेकिन स्वरोजगार युवाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान प्रदान करता है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के आंकड़े भी यह दर्शाते हैं कि युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि के लिए कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन आवश्यक है। बिहार राज्य में ग्रामीण स्वरोजगार पर किए गए अध्ययनों में मधेपुरा जिले को विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र माना गया है। सिंह और मिश्रा (2019) के शोध के अनुसार, मधेपुरा जिले में युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाएँ कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और छोटे उद्योगों में अधिक हैं। लेकिन पूंजी की कमी, बाजार तक पहुँच की कठिनाई और तकनीकी ज्ञान की कमी मुख्य बाधाएँ हैं। इसके अलावा, ग्रामीण युवाओं में पारंपरिक रोजगार की मानसिकता भी स्वरोजगार की दिशा में एक बड़ा अवरोध है। कुमार और वर्मा (2020) ने अध्ययन किया कि ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार केवल आर्थिक लाभ नहीं देता, बल्कि उनके सामाजिक सशक्तिकरण और मानसिक विकास में भी योगदान करता है। युवाओं में आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता और समाज में सक्रिय भागीदारी स्वरोजगार के माध्यम से बढ़ती है। यह दृष्टिकोण मधेपुरा जिले के ग्रामीण युवाओं के लिए भी महत्वपूर्ण है, जहाँ पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ और जातिगत परंपराएँ स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाने में बाधक बन सकती हैं। विभिन्न शोधों (जैसे झा, 2021) से पता चलता है कि स्वरोजगार की बाधाएँ वित्तीय, तकनीकी, सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर होती हैं। मधेपुरा जिले में युवाओं के लिए स्वरोजगार शुरू करने में मुख्य बाधाएँ हैंरू प्रारंभिक पूंजी की कमी, आधुनिक तकनीक का अभाव, बाजार तक सीमित पहुँच, प्रशिक्षण और मार्गदर्शन का अभाव। इसके अलावा, परिवारिक और सामाजिक दबाव भी युवाओं को स्वरोजगार की दिशा में प्रयास करने से रोकते हैं। अनेकों अध्ययन यह दर्शाते हैं कि स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जैसे मुद्रा योजना, कौशल विकास मिशन, स्टार्टअप इंडिया आदि। यादव (2022) के अनुसार, इन योजनाओं से युवाओं को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्राप्त होता है, लेकिन मधेपुरा जिले में इन योजनाओं की जानकारी का अभाव युवाओं तक लाभ पहुँचाने में बड़ी बाधा बनता है। वैश्विक अध्ययन भी यह दर्शाते हैं कि ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार संपर्क आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, नेपाल और बांग्लादेश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार कार्यक्रमों से युवाओं की आय और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। यह अध्ययन मधेपुरा जिले में स्वरोजगार की नीति और

कार्यक्रमों के डिज़ाइन में सहायक हो सकता है। साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार संभावनाओं से भरपूर है, लेकिन अनेक बाधाएँ मौजूद हैं। ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार के विकास के लिए वित्तीय, तकनीकी, सामाजिक और शैक्षणिक सहायता की आवश्यकता है। साथ ही, सरकारी योजनाओं की जानकारी और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन भी अनिवार्य है।

उद्देश्य

- मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए उपलब्ध स्वरोजगार के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, छोटे उद्योग और डिजिटल व्यवसाय का अध्ययन करना।
- ग्रामीण युवाओं के स्वरोजगार को प्रभावित करने वाली प्रमुख बाधाओं जैसे पूंजी की कमी, तकनीकी ज्ञान का अभाव, बाजार तक पहुँच और सामाजिक/सांस्कृतिक कारकों की पहचान करना।
- ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार के प्रति रूचि, जोखिम लेने की क्षमता और नवाचार के प्रति उनकी मानसिकता का मूल्यांकन करना।
- स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाली केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और वित्तीय सहायता की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- शोध के आधार पर मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने हेतु रणनीति और सुझाव प्रदान करना।

परिकल्पना

- स्वरोजगार की संभावनाएँ और संसाधनों की उपलब्धता में सकारात्मक संबंध है।
- पूंजी और वित्तीय सहायता की कमी स्वरोजगार में बाधा उत्पन्न करती है।
- तकनीकी और व्यवसायिक कौशल का स्वरोजगार पर सकारात्मक प्रभाव है।
- युवाओं की मानसिकता और जोखिम लेने की प्रवृत्ति स्वरोजगार को प्रभावित करती है।
- सरकारी योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी स्वरोजगार को बढ़ावा देती है।

शोध् का महत्व

मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का सामाजिक महत्व अत्यधिक है। पारंपरिक रोजगार के सीमित अवसरों और कृषि पर निर्भरता के कारण युवाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए स्वरोजगार की आवश्यकता है। स्वरोजगार के माध्यम से युवा न केवल अपने परिवार की आय में योगदान करते हैं, बल्कि सामाजिक पहचान और आत्म–सम्मान भी प्राप्त करते हैं। यह अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि किस प्रकार स्वरोजगार सामाजिक बदलाव, लैंगिक समानता और ग्रामीण समाज में युवाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित कर सकता है। मधेपुरा जिले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है, जिसमें अस्थायी रोजगार और मौसमी आय ही मुख्य साधन हैं। स्वरोजगार युवाओं को स्थायी आय और आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि किस प्रकार ग्रामीण युवा स्वरोजगार के विभिन्न क्षेत्रों– जैसे कृषि आधारित व्यवसाय, छोटे उद्योग, हस्तशिल्प और डिजिटल व्यवसायकृमें निवेश कर सकते हैं। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं और विकास संगठनों के लिए मार्गदर्शन का साधन बनेगा। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मधेपुरा जिले में स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाली नीतियों, योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का विश्लेषण करेगा। अध्ययन से यह पता चलेगा कि किन क्षेत्रों में सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है और किन क्षेत्रों में सुधार की जरूरत है। यह शोध नीति निर्माण, संसाधन आवंटन और कार्यक्रम डिज़ाइन में सहायक साबित होगा। स्वरोजगार की दिशा में युवाओं की मानसिकता और जोखिम लेने की क्षमता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण युवा अक्सर पारंपरिक रोजगार की ओर झुकाव रखते हैं और स्वरोजगार के जोखिम से डरते हैं। यह अध्ययन यह जांचेगा कि किस प्रकार युवा नवाचार, जोखिम प्रबंधन और व्यवसायिक सोच के माध्यम से स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित और सक्षम हो सकते हैं। स्वरोजगार व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे ग्रामीण समाज के विकास में भी योगदान करता है। मधेपुरा जिले में स्वरोजगार युवाओं को स्थानीय संसाधनों का उपयोग करने और स्थानीय बाजारों के साथ जुड़ने का अवसर देता है। इसका प्रभाव स्थानीय

उद्योग, रोजगार के अवसर, सामाजिक समरसता और सामुदायिक विकास पर पड़ता है। यह शोध यह स्पष्ट करेगा कि कैसे स्वरोजगार सामूहिक विकास में भी योगदान कर सकता है। स्वरोजगार के क्षेत्र में सफलता के लिए तकनीकी और व्यवसायिक कौशल आवश्यक हैं। मधेपुरा जिले में युवाओं को स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाने हेतु प्रशिक्षण, शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम आवश्यक हैं। यह अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि शिक्षा और प्रशिक्षण किस हद तक युवाओं को स्वरोजगार की दिशा में सक्षम बनाते हैं और उनके व्यवसायिक दृष्टिकोण को सुधारते हैं। बेरोजगारी ग्रामीण युवाओं के लिए एक गंभीर समस्या है। मधेपुरा जिले में स्वरोजगार युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है और बेरोजगारी की समस्या को कम करने में योगदान देता है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करेगा कि स्वरोजगार न केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करता है, बल्कि जिले की समग्र अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में सुधार लाता है। स्वरोजगार ग्रामीण युवाओं के वित्तीय सशक्तिकरण में सहायक होता है। यह अध्ययन यह जानने में मदद करेगा कि किस प्रकार स्वरोजगार युवाओं को पूंजी सृजन, निवेश की समझ और वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। इसके माध्यम से युवा अपने व्यवसाय को स्थायी और लाभकारी बनाने में सक्षम होते हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाएँ और बाधाएँ

स्वरोजगार क्षेत्र / बाधा	हाँ (%)	नहीं (%)
कृषि आधारित व्यवसाय	120 (60%)	80 (40%)
पशुपालन / मत्स्य पालन	90 (45%)	110 (55%)
हस्तशिल्प / कुटीर उद्योग	70 (35%)	130 (65%)
छोटे खुदरा व्यवसाय	80 (40%)	120 (60%)
डिजिटल / ऑनलाइन व्यवसाय	50 (25%)	150 (75%)
पर्याप्त पूंजी	60 (30%)	140 (70%)
तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त	55 (27.5%)	145 (72.5%)
सरकारी योजनाओं की जानकारी	70 (35%)	130 (65%)
जोखिम लेने की मानसिकता	85 (42.5%)	115 (57.5%)
परिवार/सामाजिक समर्थन	100 (50%)	100 (50%)

कृषि और पशुपालन में युवाओं की रुचि अधिक (60% और 45%) है। डिजिटल व्यवसाय और हस्तशिल्प में केवल 25–35% युवाओं की रुचि है। पूंजी की कमी (70% को समस्या) तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव (72.5% के पास प्रशिक्षण नहीं) सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव (65%) परिवार और सामाजिक समर्थन युवाओं में स्वरोजगार की रुचि बढ़ा सकता है (50% सकारात्मक प्रतिक्रिया)। मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार की मुख्य संभावनाएँ कृषि और पशुपालन में हैं, जबकि पूंजी, प्रशिक्षण और जानकारी की कमी मुख्य बाधाएँ हैं।

स्वरोजगार क्षेत्र / पहलू	संख्या (N=200)	प्रतिशत (%)
कृषि आधारित व्यवसाय	120	60%
पशुपालन / मत्स्य पालन	90	45%
हस्तशिल्प / कुटीर उद्योग	70	35%
छोटा खुदरा व्यवसाय	80	40%
डिजिटल / ऑनलाइन व्यवसाय	50	25%
पर्याप्त पूंजी	60	30%
तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त	55	27.5%
सरकारी योजनाओं की जानकारी	70	35%
जोखिम लेने की मानसिकता	85	42.5%
परिवार/सामाजिक समर्थन	100	50%

सबसे अधिक रुचि कृषि आधारित व्यवसाय (60%) और पशुपालन/मत्स्य पालन (45%) में है। डिजिटल व्यवसाय और हस्तशिल्प में रुचि कम (25–35%) है। 70% युवाओं के पास पर्याप्त पूंजी नहीं है। 72.5% के पास तकनीकी प्रशिक्षण नहीं है। 65% युवाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है। जोखिम लेने की

मानसिकता में कमी (57.5%) भी बाधा है। 50:% युवाओं को परिवार/सामाजिक समर्थन प्राप्त है, जो स्वरोजगार में प्रेरणा का मुख्य स्रोत है। मधेपुरा जिले में स्वरोजगार की संभावनाएँ कृषि और पशुपालन क्षेत्र में अधिक हैं। स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए पूंजी सहायता, प्रशिक्षण, योजना जानकारी और सामाजिक समर्थन आवश्यक हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष

स्वरोजगार की संभावनाएँ– मधेपुरा जिले के ग्रामीण युवाओं में स्वरोजगार की सबसे अधिक संभावनाएँ कृषि आधारित व्यवसाय (फल, सब्जी, फसल प्रसंस्करण) और पशुपालन/मत्स्य पालन में हैं। छोटे खुदरा व्यवसाय और हस्तशिल्प में रुचि अपेक्षाकृत कम है, जबकि डिजिटल/ऑनलाइन व्यवसाय में युवाओं की भागीदारी न्यूनतम है।

मुख्य बाधाएँ–

स्वरोजगार को प्रभावित करने वाली प्रमुख बाधाएँ हैं–

- प्रारंभिक पूंजी की कमी (70%)
- तकनीकी और व्यवसायिक प्रशिक्षण का अभाव (72.5%)
- सरकारी योजनाओं और सहायता की जानकारी का अभाव (65%)
- जोखिम लेने की मानसिकता में कमी (57.5%)

सकारात्मक पहलू–

परिवार और सामाजिक समर्थन युवाओं में स्वरोजगार की रुचि बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 50% युवा इसे एक प्रोत्साहक कारक मानते हैं।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव–

स्वरोजगार केवल व्यक्तिगत आय बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज में आर्थिक सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और सामुदायिक विकास में योगदान करता है। मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर मौजूद हैं, लेकिन पूंजी, प्रशिक्षण, योजना जानकारी और मानसिक बाधाएँ इसे चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। यदि इन बाधाओं को दूर किया जाए तो स्वरोजगार से युवाओं की आर्थिक, सामाजिक और सामुदायिक स्थिति में सुधार संभव है।

ैसुझाव–

आर्थिक सहायता और ऋण–

- युवाओं के लिए स्वरोजगार आरंभ करने हेतु कम ब्याज दर पर ऋण और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाए।
- स्वयं सहायता समूह (SHG) और बैंकिंग योजनाओं को ग्रामीण युवाओं तक पहुँचाया जाए।

प्रशिक्षण और कौशल विकास–

- मधेपुरा जिले में स्वरोजगार से संबंधित प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और डिजिटल व्यवसाय में तकनीकी और व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाए।

सरकारी योजनाओं की जागरूकता–

- मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया और कौशल विकास योजनाओं की जानकारी युवाओं तक पहुँचाई जाए।
- गांव स्तर पर ूवर्तीवचे और ूंतमदमे बंउचे आयोजित किए जाएँ।

सामाजिक और मानसिक समर्थन–

- युवाओं में जोखिम लेने की क्षमता और व्यवसायिक सोच बढ़ाने के लिए प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- परिवार और समाज को युवाओं के स्वरोजगार में सहयोगी बनाने हेतु स्थानीय अभियान चलाए जाएँ।

बाजार और नेटवर्किंग–

स्वरोजगार के उत्पादों और सेवाओं के लिए स्थानीय और ऑनलाइन बाजारों तक पहुँच आसान बनाई जाए। युवाओं के व्यवसायों के लिए बाजार नेटवर्क और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का सहयोग दिया जाए। मधेपुरा जिले में ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का क्षेत्र व्यापक है, और यदि पूंजी, प्रशिक्षण, योजना जागरूकता और सामाजिक समर्थन जैसी बाधाओं को दूर किया जाए तो यह न केवल युवाओं के जीवन स्तर में सुधार करेगा बल्कि जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास में भी योगदान देगा।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–सूची–

1. Government of India. (2020). *Report on Skill Development and Entrepreneurship in Rural Areas*. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship.
2. National Sample Survey Office (NSSO). (2019). *Employment and Unemployment Survey, India*. Government of India.
3. Sharma, R. (2018). *Rural youth entrepreneurship in India: Challenges and opportunities*. Journal of Rural Development, 37(4), 523–538.
4. Singh, P., & Mishra, S. (2019). *Opportunities and constraints of rural entrepreneurship in Bihar*. Indian Journal of Entrepreneurship, 28(2), 45–60.
5. Kumar, A., & Verma, D. (2020). *Impact of self-employment on rural youth empowerment*. International Journal of Social Science Studies, 8(1), 15–28.
6. Jharkhand & Bihar Development Report. (2021). *Rural employment and entrepreneurship patterns*. National Institute of Rural Development.
7. Yadav, R. (2022). *Role of government schemes in promoting youth entrepreneurship in rural India*. Journal of Entrepreneurship & Management, 11(3), 34–50.
8. Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. (2019). *Annual Report: Promoting Rural Enterprises in India*. Government of India.
9. Jha, S. (2021). *Barriers to rural youth self-employment in Bihar: A case study of Madhepura district*. Journal of Rural Economy, 12(2), 72–85.
10. National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD). (2020). *Report on rural livelihoods and entrepreneurship in Eastern India*.
11. Gupta, V., & Singh, R. (2018). *Entrepreneurial skills development for rural youth in India*. Asian Journal of Management Studies, 9(2), 105–120.
12. Ministry of Skill Development & Entrepreneurship. (2019). *Skill India Mission: Progress Report*. Government of India.
13. Rao, P. S., & Das, A. (2020). *Socio-economic determinants of youth self-employment in rural Bihar*. Journal of Social and Economic Development, 22(1), 41–58.
14. World Bank. (2018). *India: Promoting youth employment and entrepreneurship in rural areas*. World Bank Publications.
15. Singh, K., & Tripathi, M. (2021). *Challenges faced by rural youth in starting small businesses: Evidence from Bihar*. International Journal of Rural Management, 17(1), 23–38.

Cite this Article

'कुमारी विजेता; डॉ0 विमला कुमारी', "मधेपुरा जिले में ग्रामीण कामकाजी युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाएँ और बाधाएँ", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."